प्रातः क्लास 15/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा को याद करो। ओमशांति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। हैं तो यह दोनों बाप। एक को रूहानी, दूसरे को जिस्मानी बाप कहेंगे। शरीर तो दोनों का एक ही है। तो जैसे कि दोनों बाप समझाते हैं। भल एक समझाते हैं, दूसरा समझते हैं, फिर भी कहेंगे दोनों समझाते हैं। यह जो इतनी छोटी सी आत्मा है उनपर कितना मैल चढ़ा हुआ है। मैल चढ़ने से कितना घाटा पड़ जाता है। यह फायदा और घाटा तब देखने में आता है जबकि शरीर के साथ हैं। तुम जानते हो जब हम आत्मा पवित्र बनेंगी तब इन (ल॰ना॰) जैसा पवित्र शरीर मिलेगा। अभी आत्मा में कितना मैल चढ़ा हुआ है। जब मधु निकालते हैं तो उनको छानने से कितने मैल निकलते हैं। फिर मधु शुद्ध अलग हो जाते हैं। आत्मा भी बहुत मैली हो जाती है। आत्मा को ही कहा जाता है डर्टी ब्रूट। आत्मा ही कंचन थी, बिल्कुल प्योर थी, शरीर भी ऐसा सुंदर था। इन (ल॰ना॰) का शरीर देखो कितना सुंदर है। मनुष्य तो शरीर को ही पूजते हैं ना। आत्मा के तरफ नहीं देखते। आत्मा की तो पहचान भी नहीं है। पहले आत्मा सुंदर बनती है तब चोला भी सुंदर मिलता है। तुम भी अभी यह बनने चाहते हो। तो आत्मा कितनी सुंदर होनी चाहिए। आत्मा को ही तमोप्रधान कहा जाता है; क्योंकि उनमें फुल किचड़ा भरा हुआ है। एक तो देह-अभिमान का किचड़ा और फिर क्रोध..... का किचड़ा। किचड़ा निकालने लिए छाना जाता है। तुम अच्छी रीत बैठ विचार करेंगे, तो फील होगा बहुत किचड़ा भरा हुआ है आत्मा में और रावण के परवश हैं। अभी बाप की याद में रहने से ही किचड़ा निकलना है। इसमें भी टाइम लगता है। बाप कहते हैं देह अभिमान के कारण विकारों का कितना किचड़ा है। क्रोध का भी किचड़ा कम नहीं है। क्रोधी अंदर में जैसे जलता रहता है। कोई न कोई बात पर दिल जली हुई रहती है। सिकल भी टॉमी जैसे रहती है। अभी तुम समझते हो हमारी आत्मा कितनी मैली हुई है। आत्मा कितनी जली हुई है, अभी पता पड़ता है। यह बातें समझने वाले भी बहुत थोड़े हैं। इसमें तो फर्स्ट क्लास फूल चाहिए ना। अभी तो बहुत ही खामियाँ हैं। कोई कोई में तो ऐसी खामियाँ रहती हैं जो उनसे बात करने, देखने को भी दिल नहीं होती। तुमको तो बिल्कुल पवित्र बनना है ना। यह ल॰ना॰ कितने पवित्र थे। वास्तव में इन्हों को हाथ लगाने का भी हुकुम नहीं है। डर्टी ब्रूट जाकर इतने पवित्र देवताओं को जाकर हाथ लगा भी न सके। हाथ लगाने लायक ही नहीं। नालायक हैं। शिव को तो हाथ लगाने की दरकार ही नहीं। वह है ही निरकार। उनको हाथ लग ही नहीं सकता। वह तो मोस्ट प्योर है। भल उनकी प्रतिमा बड़ी रख दी है; क्योंकि इतनी छोटी बिंदी उनको तो कोई हाथ लगा न सके। आत्मा शरीर में प्रवेश करती है तो शरीर बड़ा होता है। आत्मा तो बड़ी-छोटी होती ही नहीं। यह तो है ही किचड़े की दुनिया। आत्मा में कितना किचड़ा है। अभी तो पवित्र बन रहे हो। तो किच(ड़े) वालों से कितना मिक्सअप होना पड़ता है। नहीं तो ऐसे किचड़े वाले शिवबाबा को छू भी नहीं सकते। शिवबाबा बहुत सेक्रेड है। बहुत पवित्र है। यहाँ तो सभी को एक समान बना देते। उनको कहा ही जाता है जानवरों की दुनिया। एक/दो को कहते भी हैं तुम तो जैसे जानवर हो। तुम तो गधा हो। मकना हाथी हो। सतयुग में ऐसी बातें होती ही नहीं। अभी तुम फील करते हो हमारी आत्मा में बड़ी मैल चढ़ी हुई है। आत्मा लायक ही नहीं है जो बाप को याद करे। नालायक समझ माया भी उनको एकदम हटा देती है। बाप कितना सेक्रेड है। तुम आत्माएँ क्या से क्या बन जाती हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं तुमने मुझे बुलाया ही है आत्मा को युाध(शुद्ध) बनाने। बहुत किचड़ा भरा हुआ है। चलन देखकर जैसे नफरत आती है। यह किचड़ा तो कब शुद्ध हो न सके। असंभव है। बगीचा है ना। बगीचे में कोई सभी फर्स्ट क्लास फूल नहीं होते हैं। नम्बरवार होते हैं। बाप है बागवान। आत्मा कितनी पवित्र बनती है। फिर कितनी मैली एकदम काँटा बन जाती है। आत्मा में ही देह अभिमान का, काम, क्रोध आदि का किचड़ा पड़ता है। क्रोध भी मनुष्य में कितना है। तो वा(तोबा!)। तुम पवित्र बन जावेंगे तो फिर कोई का मुँह देखने दिल भी नहीं होगी। सी नो ईविल। अपवित्र को देखना ही नहीं। आत्मा पवित्र बन, जब पवित्र नया चोला लेती है तो फिर किचड़ा देखते ही नहीं। किचड़े की दुनिया ही खत्म हो जाती है। बाप समझाते हैं तुम देह अभिमान में आकर कितना किचड़ा

बन पड़ी है। पतित बन पड़ी है। बच्चे बुलाते भी हैं बाबा हमारे में क्रोध का भूत है। बाबा हम आपके पास आये हैं पवित्र बनने। जानते हैं बाप तो है ही एवर पवित्र। ऐसे बाप की कितनी ग्लानि करते हैं। उनको भित्तर-ठिक्कर में, कुत्ते-बिल्ले में सभी में ठोक देते। हाइएस्ट अथॉरिटी को कितना डिफेम करते हैं। अपन पर भी बड़ी नफरत आती है, हम क्या थे। फिर क्या से क्या बन जाते हैं। यह बातें तुम बच्चे ही समझते हो। और कोई भी सतसंग वा यूनिवर्सिटी में कहाँ भी ऐसी एमऑबजेक्ट कोई समझा न सके। अभी तुम बच्चे समझते हो हमारी आत्मा में कैसे किचड़ा भरता है। दो कला कम हुई फिर 4कला कम हुई। किचड़ा पड़ता गया। इसलिए कहा जाता है तमोप्रधान। एक/दो को कैसे गालियाँ देते रहते। कोई लोभ में, कोई मोह में, कोई क्रोध में जल मरते हैं। इसी अवस्था में ही जल जलकर मर जाना है। अभी तुम बच्चों को तो शिवबाबा की याद में ही शरीर छोड़ना है। जो शिवबाबा ऐसा बनाते हैं। इन ल॰ना॰ को ऐसा बाप ने बनाया ना। तो अपन पर कितनी खबरदारी रखनी चाहिए। तूफान तो बहुत ही आवेंगे। तूफान यह माया के ही आते हैं। और कोई का तूफान नहीं है। जैसे शास्त्रों में कहानियाँ लिख दी हैं हनुमान आदि की। यह सभी गपोड़े हैं जो कहते हैं भगवान ने शास्त्र बनाई है। भगवान तो सभी वेदों शास्त्रों का सार सुनाते हैं कि यह किचड़ा बनाते हैं, जिससे पढ़ते-2 दुर्गति होती है। यह तो आधा कल्प बाद रावण की मत मिलती है। भगवान ने तो सद्गति कर दी, उनको शास्त्र बनाने की क्या दरकार। व्यास जिसको भगवान कहते हैं उसने शास्त्र आदि बनाई, यह तो दुर्गति की है। मनुष्यों ने ही बनाई है ना। अभी बाप कहते हैं हियर नो ईविल..... इन शास्त्रों आदि से तुम ऊँच नहीं बन सकते हो। मैं तो उन सभी से अलग हूँ। कोई भी पहचानते नहीं। तुम्हारे (में) भी कोई फूल हैं जो बाप को देखने लायक हैं। बाप जानते हैं कौन-2 मेरी सर्विस करते हैं अर्थात् कल्याणकारी बन औरों का भी कल्याण करते हैं। वही दिल पर चढ़ते हैं। कई तो ऐसे भी हैं जिनको सर्विस का पता नहीं है। ऐसे को तो बाप जैसे कि देखते हुये नहीं देखते हैं। डर्टी को क्या देखेंगे? इसलिए अभी बाप कहते हैं किचड़ा निकालते जाओ। ज्ञान तो मिला है अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। भल आत्मा शुद्ध बनती जाती है, शरीर तो फिर भी डर्टी है ना। जिनकी आत्मा शुद्ध होती जाती है उनकी एक्टिविटी में भी रात-दिन का फर्क पड़ता जाता है। चलन से ही मालूम पड़ जाता है। नाम कोई का नहीं लिया जाता है कि और ही बदतर न बन जाये। अभी तुम फर्क देख सकते हो। तुम क्या थे, फिर क्या बनना है। तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अंदर गंद जो भरा हुआ है उनको निकालने का है। कोई-2 बहुत डर्टी बच्चे होते हैं तो उनसे बाप भी तंग हो जाते हैं। कहते हैं ऐसा बच्चा तो न होता तो अच्छा। फूलों की बगीचे की खुशबुएँ होती हैं; परंतु ड्रामा अनुसार किचड़ा भी है। अक को तो बिल्कुल देखने दिल नहीं होती; परंतु बगीचे में जाने पर नज़र तो सभी पर पड़ेगी ना। आत्मा कहेंगी यह फलाना फूल है। खुशबुएँ भी अच्छे फूलों की लेंगे ना। बाप भी देखते हैं इनकी आत्मा कितनी याद की यात्रा में रहती है। कितना पवित्र बनी है और फिर औरों को भी आप समान बनाते हैं। ज्ञान सुनाते हैं। मूल बात ही है मन्मनाभव। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पवित्र फूल बनेंगे। यह (ल॰ना॰) कितने पवित्र फूल हैं। इनसे भी शिवबाबा बहुत सेक्रेड है। मनुष्यों को थोड़े ही पता है इन ल॰ना॰ को भी शिवबाबा ने ऐसा बनाया है। तुम जानते हो शिवबाबा ने इन्हों को ऐसा बनाया है। इस पुरुषार्थ से यह बने हैं। राम ने कम पुरुषार्थ किया है तो चन्द्रवंशी बने। बाप समझाते तो बहुत ही हैं। एक तो याद की यात्रा में रहना है, जिससे गंद निकले। पवित्र बन जावेंगे फिर तो तुम्हारी दिल नहीं होगी गंदे से मिलने; परंतु सर्विस अर्थ तुमको बात-चीत करनी पड़ती है। कोई तो बड़े गंदे डर्टी ब्रूट्स होते हैं। कोई बहुत अच्छी रीति बैठ सुनते हैं। आरग्यू भी नहीं करते। कहेंगे आप बिल्कुल ठीक समझाते हो। म्युज़ियम में आते तो बहुत हैं ना। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक रखना है। सर्विस को छोड़ कब नींद नहीं करनी है। सर्विस पर बड़ा एक्युरेट रहना चाहिए। म्युज़ियम में भी तुम रेस्ट का टाइम छोड़ते हो, गला थक जाता है। भोजन आदि भी पाना है; परंतु अंदर में दिन-रात उछल आनी चाहिए, कोई

आये तो उनको रास्ता बतावें। भोजन के टाइम कोई आ जाते हैं, तो पहले उनको अटेंड कर फिर भोजन खाना चाहिए; परंतु ऐसी सर्विस वाला एक भी है नहीं। जो हेड्स होकर रहती हैं, बड़ा देह-अभिमान आ जाता है। आराम पसंद बन जाते हैं। चाय भी कोई खटिया पर देवें। कपड़ा भी उनको कोई पहनावें। ऐसे नवाबी बन जाती हैं। बाप को समझानी भी देनी पड़े ना। यह नवाबी छोड़ो। फिर बाप सा॰ भी करावेंगे, अपना पद देखो। देह-अभिमान का कुल्हाड़ा आपे ही अपने पांव पर लगाया है। बहुत बच्चे बाबा से भी रीस करते हैं। अरे, यह तो शिवबाबा का रथ है, इनकी सम्भाल करनी पड़ती है। रथ को तंदुरुस्त रखना पड़ता है। नहीं तो यह तबला कब-कब खराब हो पड़ता है। इनसे थोड़े ही रीस करनी है। बाबा यह करते हैं, यह खाते हैं, हम क्यों न करें? यह किसका रथ है यह भी समझने की बुद्धि नहीं है। इनकी तो बड़ी खबरदारी रखनी पड़ती है। कुछ नीचे-ऊपर बेकायदे चीज़ खा लेते हैं तो झट तबला खराब, खाँसी आदि हो जाती है। यहाँ तो ऐसे हैं ढेर दवाइयाँ लेते रहते। दस डॉक्टरों की दवाइयाँ करते रहते हैं। भल बाबा कहते हैं शरीर को तंदुरुस्त रखना है; परंतु अपनी अवस्था को भी तो देखना है ना। तुम बाबा की याद में रहकर खाओ तो कब कोई चीज़ नुकसान नहीं करेगी। याद (से) ही ताकत भर जावेगी। भोजन बड़ा शुद्ध हो जावेगा; परंतु वह अवस्था है नहीं। बाबा तो कहते हैं ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन उत्तम ते उत्तम है; परंतु वह तब जबकि याद में रह बनावें। याद में रह बनाने से उनको भी फायदा और खाने वाले का भी फायदा होगा। अक भी तो बहुत है ना। वह बिचारे क्या पद पावेंगे। बाबा को तो रहम पड़ता है। सुर मंडल के साज़ से देहअभिमानी सांडे क्या समझे। सांडे फेल हो जाते हैं। दास-दासियाँ बनने से फिर भी साहुकार बनना अच्छा है। दास-दासियाँ रख सकेंगे; परंतु ड्रामा में दास-दासियाँ बनने की भी नूँध है। इसमें खुश न होना चाहिए। विचार भी नहीं करते हैं हमको ऐसा बनना है। वही आसुरी चलन, आसुरी खान-पान चला ही आता है। बाप तो कहते हैं निरंतर मुझ एक को याद करो। सिमर-सिमर सुख पाओ..... भक्तों ने फिर सुमिरण माला बैठ बनाई है। वह भक्तों का काम है। बाप तो सिर्फ कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस। बाकी कोई जाप न करो। न माला फेरो। बाप को जाना है अब उनको याद करना है। मुख से बाबा बाबा भी कहना थोड़े ही है। तुम जानते हो वह हम आत्माओं का बेहद का बाप है, उनको याद करने से हम सतोप्रधान बन जावेंगे। अर्थात् आत्मा कंचन बन जावेगी। कितना सहज है; परंतु युद्ध का मैदान है ना। तुम्हारी है ही माया से लड़ाई। वह घड़ी-2 तुम्हारी बुद्धि का योग तोड़ती है। जितना-2 विनाशकाले प्रीत बुद्धि है इतना पद भी होता है। सिवाय एक के और कोई याद भी न आये। कल्प पहले भी ऐसे निकले हैं जो विजयमाला के दाने बने हैं। तुम जो ब्राह्मण कुल के हो, ब्राह्मणों की ही रुद्रमाला बनती है। जिन्होंने बहुत गुप्त मेहनत की है। ज्ञान गुप्त है ना। बाप तो हरेक को अच्छी रीत जानते हैं। अच्छे-2 नम्बर वाले जिनको महारथी समझते थे वह आज है नहीं। अभी तो माला के आठ/दस दाने भी मुश्किल बना सकेंगे। देह-अभिमान बहुत है। बाप की याद रह नहीं सकती है। माया बड़ी ज़ोर से थप्पड़ मारती है। बहुत थोड़े हैं जिनकी माला बन सकेगी। तो बाप फिर भी बच्चों को समझाते हैं अपन को देखते रहो हम कितने पवित्र देवताएँ थे फिर हम क्या से क्या बन गये हैं। किचड़ा बन गये हैं। अभी शिवबाबा मिला है तो उनकी मत पर चलना चाहिए। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। बहुत हैं जो देहधारी को याद करते हैं। कोई की भी याद न आये, चित्र भी कोई का न रखना है। एक शिवबाबा की ही याद रहे। शिवबाबा को शरीर है नहीं। यह भी कुछ समय के लिए लोन लेता है। तुमको ऐसा देवी-देवता (ल॰ना॰) बनाने लिए कितनी मेहनत करते हैं। बाप कहते हैं तुम हमको पतित दुनिया में ही बुलाते हो। तुमको पावन बनाता हूँ फिर भी तुम तो मुझे पावन दुनिया में तो बुलाते ही नहीं हो। वहाँ (क)या आकर करेंगे? उनकी सर्विस ही है पावन बनाने की। बाप जानते है कि एकदम जलकर काले कोयले बन गये हैं। कोई विकार में गिरते हैं तो एकदम काला मुँह कर देते हैं। दंड भी सौणा पड़ जाता है। अच्छा, रूहानी बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।